पाठ 14. गिरिधर की कुँडलियाँ

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में विवेचनात्मक सोच संबंधी कौशल विकसित करना है ताकि वे अपने अनुभवों का सकारात्मक मूल्यांकन कर सकें। कवि गिरिधर जी की कुँडलियाँ जनमानस के बीच अति लोकप्रिय हैं। इन कुँडलियों में कवि ने मानव मूल्यों के पक्ष को उभारा है।

पाठ का सार

कवि कहते हैं कि कोई भी कार्य बिना सोचे-समझे नहीं करना चाहिए। इससे मनुष्य सभी के लिए हँसी का पात्र बन जाता है तथा बाद में उसे पछताना पड़ता है। बिना विचारे काम करने से काम तो बिगड़ता ही है, मनुष्य के मन को शांति भी नहीं मिलती।

कवि आगे कहते हैं कि जो बीत गया है उसे भूल जाना चाहिए तथा भविष्य के बारे में सोचना चाहिए। काम होने के बाद पछताना मूर्खता है। अगर कोई गलती हो गई हो तो उसको सुधार लेना चाहिए। गलती होना गलत नहीं है परंतु उसकी पुनरावृत्ति करना बहुत बड़ी गलती है।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  लय के साथ पाठ का वाचन करें और बच्चों को अनुसरण करने को कहें। जो शब्द मानक हिंदी के नहीं हैं, उनका हिंदी पर्याय साथ-साथ ही बताते जाएँ। इस पाठ में निहित नीति-उपदेशों को वर्तमान संदर्भ में जोड़ते हुए कुछ उदाहरण दें।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 40** देखें।
  - **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्देश्य हिंदी भाषा के व्याकरण-पक्ष को सुदृढ़ करना है।
  - समास के भेदों को विधिवत एक-एक कर पुनः समझाएँ। ऐसे उदाहरण, जो विग्रह के आधार पर अलग-अलग समास के अंतर्गत आ जाते हैं, के उदाहरण दिए जाएँ।
  - मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग अवश्य करवाएँ। अलग-अलग बच्चों से अलग-अलग प्रकार के वाक्य बनवाएँ।
- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - कक्षा में दोहों और छंदों की रचनाओं का पाठ कराएँ।
  - सकारण किए गए कार्य व अकारण किए गए कार्य के बारे में चर्चा की जा सकती है। काम की सफलता के कौन-कौन से कारक हो सकते हैं, इसके बारे में बच्चों की राय जानी जा सकती है।
  - मौलिक रचना के लिए कक्षा में बच्चों को छंद-ज्ञान कराया जा सकता है।